।। निरपख को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ निरपख को अंग लिखंते ||

सब को न्याव करे नर सोई || ज्यां घट अणभे ज्ञान प्रकासा ||
हिरदे आंख खुले ऊर अंतर || दसमें द्वार किया तत बासा ||
ज्ञान सु माँड सबे बिध सुझी || भेद सो पाँच पिछाण लिया हे ||
सोच बिचार कहे सुखदेवजी || ब्रम्ह गिनान तकेस किया हे || १ ||

जो निरपक्ष है और जिसके घट में अनुभव ज्ञान का प्रकाश हुआ है वही मनुष्य सबका न्याय करेगा । जिसके देहके हृदय के भीतर ज्ञान आंखे खुल गयी है और जिसने दसवेद्वार पर जाकर वस्ती की है । उसे सतस्वरुप ज्ञान से सभी सृष्टि की सभी विधी दिखने लगती है । जिसने पांचो भेद याने श्रृतज्ञान,मतैकज्ञान,मनपर्चेज्ञान,अवधीज्ञान व कैवल्य(सतस्वरुप)ज्ञान पहचान लिया है । वही निरपक्ष है,वही सतस्वरुप ब्रम्ह ज्ञान बतायेगा । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज समझकर विचार करके कहते है । ||१||

मनोहर छंद ||

काम हीन क्रोध डिंभ लोभ हीन मोह हे || अरी आठ पोर सुण राम गुण गावे हे||
पाप हीन पुन हर्ष सोग नही सांसो || सास ही ऊसास घर नाभ दिस धावे हे ||
राग धेक मेरी तेरी कछु नही धारणा || निर पखी ज्ञान करे ओरूं समझावे हे ||
कहे सुखराम हर नाम रस पिजीये || अेसो हरीजन हरी रामजी कूं भावे हे || २ ||

जो निरपक्ष मनुष्य है । उसको काम,क्रोध,लोभ मोह व दंभ ये नही रहता है । वो तो आठों प्रहर,रात–दिन रामनाम का गुण गाते रहते है । वे पाप या पुण्य कुछ भी नही जानते है और उनको किसी भी प्रकार का हर्ष भी नही होता और कोई यदी मर भी गया तो उसका शोक भी नही होता है और चिंता(फिकीर)भी किसी भी चीज की नही करते । वे श्वासों–श्वास से भजन करते है । उनकी श्वांस नाभी मे दौड़ती है । उनको किसी से भी राग याने प्रीती व धेश याने द्वेष और मेरी या तेरी यह धारणा होती नही है । वे नर निरपक्ष(किसी का भी पक्ष न लेते हुए),ज्ञान कहकर दुसरों को समझाते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि वे हर याने रामनाम का रस पीते,ऐसे हरजन रामजी को भाते है,अच्छे लगते है । || २ ||

अेसो हरीजन हर राम कूं पियारो जूं || घर बन मधे मन अेक हूं रहावे हे ||
वास न ऊपास भूल आन नही पूजबा || बेद न कुराण जुग सुख नही गावे हे ||
तीन तिर लोक सुर देव नही धारणा || परा पेल ब्रम्ह सूं ज्युं प्रित सो लगाई हे ||
केहे सुखराम अेसो साधुजन जुग मांही || हम वे तो सगे यार सुणो गुर भाई हे ||३||

ऐसा हरजन(रामजी का जन)होगा,तो वे हर(रामजी को)प्रिय है । वे घर में रहे या वनवास करें,उसका दोनों जगह मन एक जैसा ही रहता है । वे वास(व्रत करके भुखा रहना)कभी

भी नही करते है और उपवास(दूसरे देवता का इष्ट,दूसरे देव की पूजा),ऐसी किसी भी देव की उपासना नही करते है और अन्य देवताओं को भुलकर भी नही पूजते है । वे वेद भी नही मानते,कुरान भी नही मानते और वे इस संसार के सुख भी नही मानते है ।(जैसे तपश्या करके राजा होते,या सौ यज्ञ करके इंद्र होते । आदी–आदी)। तो ऐसे ही संसार के सुख के लिए भी कर्म करके,संसार के सुख मिलना ही चाहिए इसको भी नही मानते है ।) और ये तीन त्रिलोकी देव(ब्रम्हा,विष्णू व महादेव)और सुर(तैतीस करोड़ देवता),इनको भी धारण नही करते है और वे परा याने पारब्रम्ह होणकाल के परेके सतस्वरुप ब्रम्ह से प्रीती लगाते है । ऐसे साधू जो संसारमें है वे और मैं तो सगे गुरू भाई है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।।।३।।

।। इति निरपख को अंग संपूरण ।।